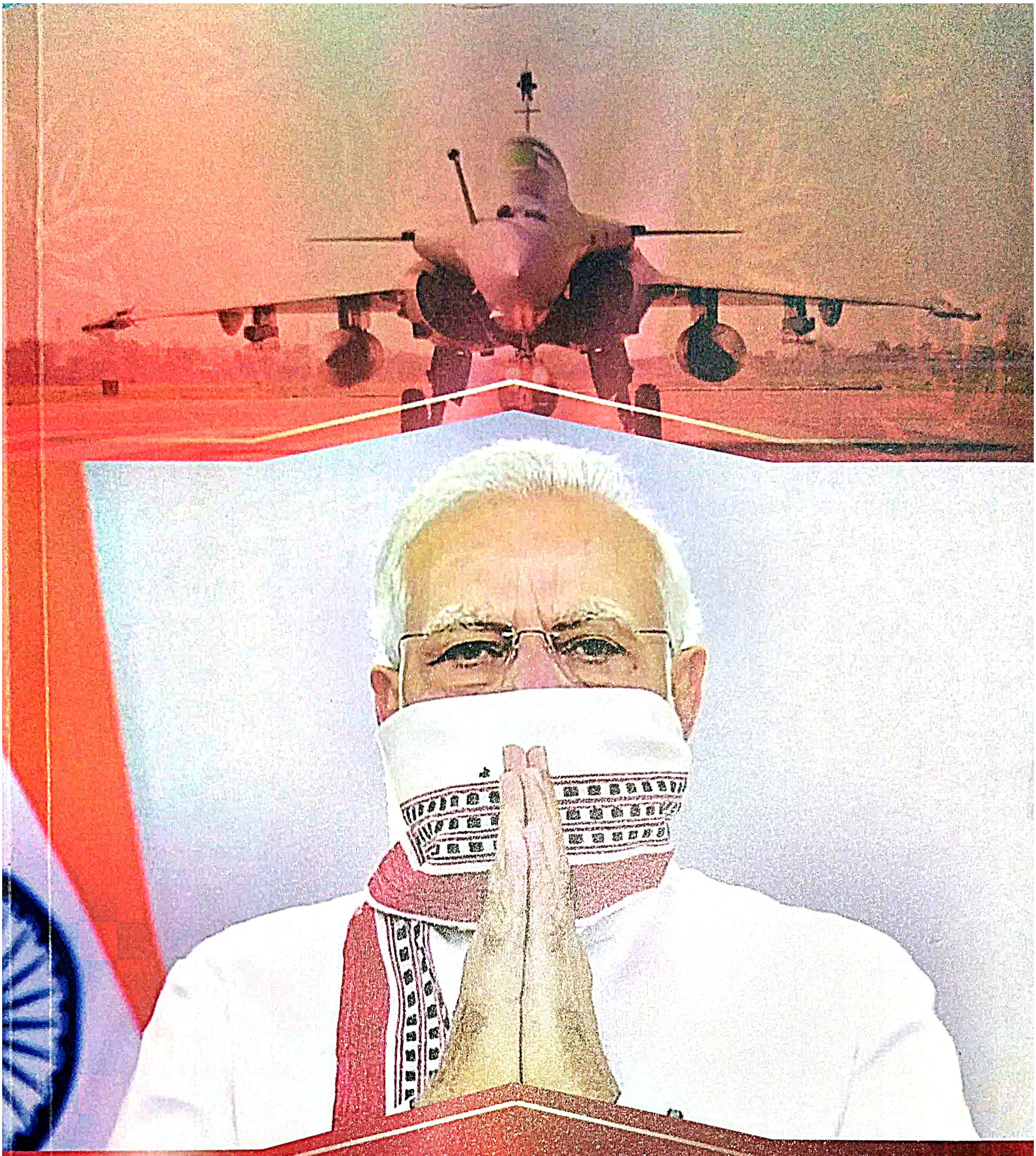

भारत 2021

रफाएल

रफाएल 4.5 जनरेशन, ट्विन-इंजन ओम्नीरोल, इंटरडिक्शन, एरियल रेकोनेसां, ग्राउंड सपोर्ट, इन-डेप्थ स्ट्राइक, एंटीशिप एंड न्यूक्लियर डेटरेंस सुविधायुक्त, विविध प्रकार के हथियारों से लैस, उड़ान प्रभुत्व वाला लड़ाकू विमान है। 10 सितंबर, 2020 को एयरफोर्स स्टेशन, अम्बाला में आयोजित एक औपचारिक समारोह में रफाएल विमान को औपचारिक तौर पर भारतीय वायु सेना में शामिल किया गया।

स्रोत: भारतीय वायु सेना

अनुक्रम

1. भारत भूमि और उसके निवासी 1
2. राष्ट्रीय प्रतीक 11
3. राजनीतिक संरचना 14
4. कृषि 50
5. संस्कृति और पर्यटन 58
6. मूल आर्थिक आंकड़े 84
7. वाणिज्य 91
8. संचार और सूचना प्रौद्योगिकी 100
9. रक्षा 133
10. शिक्षा 160
11. ऊर्जा 189
12. पर्यावरण 204
13. वित्त 226
14. कॉरपोरेट कार्य 269
15. खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले 279
16. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण 300
17. आवासन और शहरी कार्य 324
18. भारत और विश्व 331
19. उद्योग 350
20. विधि और न्याय 399
21. श्रम, कौशल विकास और रोज़गार 433
22. जनसंचार 447
23. आयोजना 481
24. ग्रामीण विकास 492
25. वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी विकास 508
26. परिवहन 533
27. जल संसाधन 553
28. कल्याण 571
29. युवा कार्यक्रम और खेल 618
30. राज्य तथा केंद्र शासित प्रदेश 631
31. राष्ट्रीय घटनाक्रम 723
32. सामान्य सूचना 727

परिशिष्ट 772

1 भारत भूमि और उसके निवासी

" भारत मानव जाति का पालना, मानव भाषा की जन्मस्थली, इतिहास की जननी, पौराणिक कथाओं की दादी और परंपरा की परदादी रहा है। मानव इतिहास में हमारी सर्वाधिक मूल्यवान और सर्वाधिक शिक्षाप्रद सामग्री का खजाना केवल भारत में निहित है।"

— मार्क ट्वेन

भारत बेजोड़ संस्कृति वाला देश है और यह विश्व की प्राचीनतम और महानतम सभ्यताओं में से एक है। यह उत्तर में बर्फ से ढके हिमालय से लेकर दक्षिण में धूप से सराबोर तटवर्ती गांवों और दक्षिण–पश्चिम तट पर आर्द्र उष्णकटिबंधीय जंगलों, पूर्व में ब्रह्मपुत्र घाटी के उपजाऊ क्षेत्र से लेकर पश्चिम में थार रेगिस्तान तक फैला है। भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है।[1] स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पिछले कई वर्षों के दौरान भारत ने चहुंमुखी सामाजिक–आर्थिक प्रगति की है। आकार की दृष्टि से भारत विश्व में सातवें और जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है। पर्वतमाला और समुद्र इसे शेष एशिया से पृथक करते हैं और एक विशिष्ट भौगोलिक पहचान प्रदान करते हैं। यह उत्तर में विशाल हिमालय से घिरा है और दक्षिण की ओर विस्तार के साथ कर्क रेखा पर शंकु आकार धारण किए पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर के बीच हिंद महासागर में फैला है।

पूरी तरह उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित इसकी मुख्य भूमि की अवस्थिति 8°4' और 37°6' अक्षांश उत्तर तथा 68°7' और 97°25' देशांतर पूर्व में है। उत्तर से दक्षिण तक इसका अक्षांशीय विस्तार करीब 3,214 किलोमीटर और पूर्व से पश्चिम की तरफ देशांतरीय विस्तार करीब 2,933 किलोमीटर है। इसकी स्थलीय सीमा करीब 15,200 किलोमीटर है। मुख्य भूमि, लक्षद्वीप समूह और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह सहित तट रेखा की कुल लंबाई 7,516.6 कि.मी. है।

भौगोलिक पृष्ठभूमि

भारत की सीमा उत्तर–पश्चिम में अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान; उत्तर में चीन, भूटान तथा नेपाल; सुदूर पूर्व में म्यामां और पूर्व में बांग्लादेश से लगती है। पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाड़ी से निर्मित एक तंग समुद्री चैनल श्रीलंका को भारत से पृथक करता है। देश को मुख्य रूप से 6 अंचलों- उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी, मध्यवर्ती और पूर्वोत्तर अंचल में वर्गीकृत किया जा सकता है। यहां 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं।[2]

---

[1]अनंतिम–आंकड़े

[2]पूर्व जम्मू और कश्मीर राज्य को विभाजित करके दो केंद्र शासित प्रदेश- जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख बनाये गये। केंद्र शासित प्रदेश दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव 26 जनवरी, 2020 से एक केंद्र शासित प्रदेश बन गये हैं।

प्राकृतिक संरचना

मुख्य भूमि चार भागों- विशाल हिमालय क्षेत्र, गंगा और सिंधु के मैदानी भाग, रेगिस्तानी क्षेत्र और दक्षिणी प्रायद्वीप में बंटी है।

हिमालय पर्वतमाला में तीन लगभग समानांतर शृंखलाएं हैं, जो बड़े पठारों और घाटियों से विभाजित हैं, जिनमें से कश्मीर और कुल्लू जैसी कुछ विस्तृत और अत्यंत उपजाऊ घाटियां प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हैं। इन पर्वतमालाओं में विश्व की कुछ सबसे ऊंची चोटियां स्थित हैं। समुद्र तल से बहुत अधिक ऊंची होने के कारण इसके कुछ दर्रों से होकर ही यात्रा की जा सकती है, जिनमें दार्जिलिंग के उत्तर-पूर्व में चुंबी घाटी होते हुए मुख्य भारत-तिब्बत व्यापार मार्ग पर स्थित जेलेप-ला, नाथू-ला और कल्पा (किन्नौर) के उत्तर-पूर्व में सतलुज घाटी में शिपकी-ला प्रमुख हैं। पर्वतमाला करीब 2,400 किलोमीटर में फैली है, जो अलग-अलग स्थानों पर 240 से 320 किलोमीटर तक चौड़ी है। पूर्व में भारत और म्यामां तथा भारत और बांग्लादेश के बीच अपेक्षाकृत कम ऊंचाई की पर्वत शृंखलाएं हैं। लगभग समूचे पूर्व-पश्चिम में गारो, खासी, जयंतिया और नगा पर्वतमालाएं इस शृंखला को उत्तर-दक्षिण में मिजो और रखाईं पर्वतमाला के साथ जोड़ती हैं।

गंगा और सिंधु के मैदानी भाग, करीब 2,400 किलोमीटर लंबे और 240 से 320 किलोमीटर चौड़े हैं, जो तीन विशेष नदी प्रणालियों- सिंधु , गंगा और ब्रह्मपुत्र के थालों से मिल कर बने हैं। ये मैदान, नदियों की बाढ़ के साथ बह कर आई कछारी मिट्टी से बने दुनिया के सबसे बड़े मैदानों में से हैं और धरती पर सर्वाधिक घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक हैं। दिल्ली में यमुना और बंगाल की खाड़ी के बीच करीब 1,600 किलोमीटर क्षेत्र की ऊंचाई में केवल 200 मीटर की ढाल है।

रेगिस्तानी क्षेत्र को दो भागों में बांटा जा सकता है- 'वृहत रेगिस्तान' और 'लघु रेगिस्तान।' वृहत रेगिस्तान कच्छ के रण से उत्तर की ओर लूनी नदी तक फैला है। समूचा राजस्थान-सिंध सीमावर्ती क्षेत्र इसमें समाहित है। लघु रेगिस्तान का विस्तार जैसलमेर और जोधपुर के बीच लूनी से उत्तर-पश्चिम तक है। बृहत और लघु रेगिस्तानों के बीच बंजर भूमि क्षेत्र है, जिसमें चूना पत्थर की पहाड़ियों से सटी चट्टानी भूमि शामिल है।

प्रायद्वीपीय पठार गंगा और सिंधु के मैदानों से सटा है, जिसमें 460 से 1,220 मीटर तक अलग-अलग ऊंचाई वाले पहाड़ और पर्वतमालाएं शामिल हैं। इनमें अरावली, विंध्य, सतपुड़ा, मैकल और अजंता पर्वतमालाएं प्रमुख हैं। प्रायद्वीप के एक तरफ पूर्वी घाट स्थित हैं जिनकी ऊंचाई करीब 610 मीटर है और दूसरी तरफ पश्चिमी घाट हैं जिनकी ऊंचाई सामान्यत: 915 से 1,220 मीटर तक है, जो कुछ स्थानों पर 2,440 मीटर तक जाती है। पश्चिमी घाटों और अरब सागर के बीच एक संकीर्ण तटवर्ती पट्टी है, जबकि पूर्वी घाटों और बंगाल की खाड़ी के बीच एक वृहत्तर तटवर्ती क्षेत्र है। पठार का दक्षिणी बिंदु नीलगिरि पर्वतमाला से निर्मित है, जहां पूर्वी और पश्चिमी घाट मिलते हैं। उसके परे कार्डमम हिल्स है जिसे पश्चिमी घाट का विस्तार माना जा सकता है।

भूगर्भीय संरचना

भारतीय उपमहाद्वीप को तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है:- (1) अतिरिक्त प्रायद्वीपीय क्षेत्र (हिमालय), (2) सिंधु-गंगा का मैदान तथा (3) प्रायद्वीपीय ढाल। लगभग 4-5 करोड़ वर्ष पहले भारतीय प्लेट का यूरेशियन प्लेट से टकराव ही भारत के वर्तमान विन्यास के लिए जिम्मेदार है। परिणामस्वरूप दुनिया में सबसे सुरम्य पर्वत शृंखला का निर्माण हुआ। टकराने से पहले यह क्षेत्र लंबे समय तक समुद्री

परिस्थितियों में रहा था और टेथिस नामक महासागर द्वार ढका हुआ था। हिमालय के दक्षिण में एक बड़ा समतल भू-भाग है, जिसे सिंधु-गंगा मैदानों के रूप में जाना जाता है। ये मैदान उम्र में सबसे छोटे हैं, प्रकृति में अत्यधिक उपजाऊ हैं और मुख्य रूप से हिमालय और प्रायद्वीपीय क्षेत्रों से बहने वाली नदियों द्वारा जमा किए गए जलोढ़ से मिलकर बने हैं।

प्रायद्वीपीय क्षेत्र का आकार उल्टे त्रिभुज जैसा है तथा यह भारत के लिए आर्थिक खनिज का भंडार माना जाता है। प्रायद्वीप अपेक्षाकृत स्थिर क्षेत्र है और इसमें कभी-कभार भूकंप से हलचल पैदा होती है। इस क्षेत्र में 380 करोड़ वर्ष पूर्व धरती के निर्माण के समय के अत्यंत प्राचीन कायांतरित शैल पाए जाते हैं; शेष चट्टानों में गोंडवाना संरचना, दक्षिणी पठार संरचना और कम प्राचीन तलछट भूमि शामिल है।

नदी प्रणालियां

भारत की नदी प्रणालियों को चार समूहों:- (1) हिमालयी नदियों, (2) दक्षिणी नदियों, (3) तटवर्ती नदियों और (4) अंतरदेशीय बरसाती नदियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। हिमालयी नदियां बर्फ और हिमनदों के पिघलने से बनती हैं और इसलिए वे वर्षभर निरंतर बहती रहती हैं। मानसून के महीनों में, हिमालयी क्षेत्र में तेज वर्षा होती है, जिससे नदियों में उफान आता है और बार-बार बाढ़ आती है। दूसरी तरफ दक्षिणी नदियां वर्षा पर निर्भर हैं, अत: उनका आकार घटता-बढ़ता रहता है। इनमें से कई नदियां बारहमासी नहीं हैं। तटवर्ती नदियां, विशेषकर पश्चिमी तटवर्ती नदियों की लंबाई अधिक नहीं है और उनके जलग्रहण क्षेत्र सीमित हैं। उनमें से अधिकतर बारहमासी नहीं हैं। अंतरदेशीय बरसाती नदियां पश्चिमी राजस्थान थाले से संबद्ध हैं जो गिनी-चुनी और अलग-थलग हैं। इनमें से ज्यादातर थोड़े दिन ही बहती हैं।

मुख्य हिमालयी नदी प्रणालियां सिंधु और गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना प्रणाली का हिस्सा हैं। सिंधु नदी, विश्व की बड़ी नदियों में से एक है, जिसका उद्गम स्थल तिब्बत में मानसरोवर के निकट है और यह पहले भारत और इसके बाद पाकिस्तान से बहते हुए अंतत: कराची के निकट अरब सागर में मिल जाती है। भारतीय भू-भाग में बहने वाली इसकी महत्वपूर्ण सहायक नदियों में सतलुज (जो तिब्बत से निकलती है), व्यास, रावी, चिनाब और झेलम शामिल हैं। गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना अन्य महत्वपूर्ण नदी प्रणाली है जिसके प्रमुख उप-थालों में भागीरथी और अलकनंदा के थाले शामिल हैं। ये दो नदियां देवप्रयाग में आकर गंगा बन जाती हैं। गंगा नदी उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल राज्यों से होकर गुजरती है। भागीरथी, अतीत के मुख्य नदी मार्ग राजमहल पर्वतमाला के नीचे से निकलती है जबकि पद्मा पूर्व की ओर बढ़ते हुए बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है। गंगा की महत्वपूर्ण सहायक नदियों में यमुना, रामगंगा, घाघरा, गंडक, कोसी, महानंदा और सोन शामिल हैं। चंबल और बेतवा इसकी महत्वपूर्ण उप-सहायक नदियां हैं, जो यमुना के गंगा में मिलने से पहले यमुना में समा जाती है। पद्मा और ब्रह्मपुत्र बांग्लादेश में मिलती हैं और पद्मा या गंगा के रूप में निरंतर बहती हैं। ब्रह्मपुत्र तिब्बत से प्रारंभ होती है, जहां इसे त्सांगपो के रूप में जाना जाता है और भारत में अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करने तक यह दिहांग के नाम से एक लंबा मार्ग तय कर चुकी होती है। पासीघाट के निकट दिबांग और लोहित नदियां ब्रह्मपुत्र में मिलती हैं और यह संयुक्त नदी असम घाटी में बहती है। धुबरी से निचली धारा बांग्लादेश में प्रवेश करती है।

भारत में ब्रह्मपुत्र की प्रमुख सहायक नदियों में सुबनसिरी, ज़िया भरेली, धनसिरी, पुथीमारी, पगलडिया और मानस शामिल हैं। बांग्लादेश में तीस्ता नदी ब्रह्मपुत्र में मिलती है और वह अंतत: गंगा में समाहित हो जाती है। मेघना की मुख्यधारा के रूप में बराक नदी मणिपुर में पर्वतीय क्षेत्र से शुरू होती है। इस नदी की

प्रमुख सहायक नदियों में मक्कू, तरांग, तुइवई, जीरी, सोनाई, रुकणी, कटाखल, धालेश्वरी, लांगचिनी, मदुआ और जयंतिया शामिल हैं। बराक बांग्लादेश में भैरव बाजार के निकट गंगा-ब्रह्मपुत्र के मिलने के स्थान तक जारी रहती है।

दक्षिणी क्षेत्र में, सामान्यत: पूर्व दिशा में बहने वाली अधिकतर बड़ी नदी प्रणालियां बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। पूर्व की ओर बहने वाली प्रमुख नदियों में गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और महानदी शामिल हैं। नर्मदा और ताप्ती पश्चिम की ओर बहने वाली प्रमुख नदियां हैं।

दक्षिणी प्रायद्वीप में गोदावरी दूसरी सबसे बड़ी नदी घाटी है, जो भारत के दस प्रतिशत क्षेत्र को कवर करती है। इसके बाद कृष्णा नदी घाटी का स्थान है और इस क्षेत्र में महानदी एक अन्य बड़ी नदी घाटी है। दक्षिण क्षेत्र के ऊंचाई वाले इलाकों में अरब सागर की ओर बहने वाली नर्मदा का थाला और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी की ओर बहने वाली कावेरी नदी का थाला, दोनों लगभग समान आकार के हैं, परंतु उनका स्वरूप और विशेषताएं भिन्न हैं।

इस क्षेत्र में अनेक तटवर्ती नदियां हैं, जो अपेक्षाकृत छोटी हैं। इन नदियों में गिनी-चुनी ऐसी हैं, जो पूर्वी तट के डेल्टा के निकट सागर में गिरती हैं, जबकि 600 ऐसी नदियां हैं; जो पश्चिमी तट पर पहुंचती हैं।

राजस्थान में कुछ ऐसी नदियां हैं जो समुद्र तक नहीं जाती हैं। वे साल्ट लेक (लवण झील) में गिरती हैं और रेत में लुप्त हो जाती हैं। इनके अलावा कुछ रेगिस्तानी नदियां हैं, जो कुछ दूरी तक बहती हैं और रेगिस्तान में लुप्त हो जाती हैं। ये हैं- लूनी, माछु, रूपेन, सरस्वती, बनास, घग्घर आदि।

समूचे देश को बीस नदी घाटियों/नदी थाला समूहों में वर्गीकृत किया गया है जिनमें से 12 बड़े थाले और 8 संयुक्त नदी थाले हैं। 12 बड़े नदी थालों में:- (1) सिंधु (2) गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना (3) गोदावरी (4) कृष्णा (5) कावेरी (6) महानदी (7) पेन्नार (8) ब्राह्मणी-वैतरणी (9) साबरमती (10) माही (11) नर्मदा (12) ताप्ती हैं। इनमें से प्रत्येक थाले का बहाव क्षेत्र 20 हजार वर्ग किलोमीटर से अधिक का है।

आयोजन और प्रबंधन के प्रयोजन के लिए आठ संयुक्त नदी थाले हैं, जो शेष सभी मध्यम (2000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर बहाव क्षेत्र वाली) और लघु नदी प्रणालियों (2000 वर्ग किलोमीटर से कम बहाव क्षेत्र वाली) को उपयुक्त ढंग से जोड़ते हैं। ये हैं- (1) सुवर्ण रेखा थाला, जो सुवर्ण रेखा और वैतरणी के बीच अन्य छोटी नदियों को जोड़ता है (2) महानदी और पेन्नार के बीच पूर्व की ओर बहने वाली नदियां (3) पेन्नार और कन्याकुमारी के बीच पूर्व की ओर बहने वाली नदियां (4) राजस्थान के रेगिस्तान में अंतरदेशीय बहाव क्षेत्र (5) लूनी सहित कच्छ और सौराष्ट्र की पश्चिम की ओर बहने वाली नदियां (6) ताप्ती से ताद्री तक पश्चिम की ओर बहने वाली नदियां (7) ताद्री से कन्याकुमारी तक पश्चिम की ओर बहने वाली नदियां और (8) म्यामां (बर्मा) और बांग्लादेश की ओर बहने वाली छोटी नदियां।

जलवायु/ऋतुएं

भारत की जलवायु को मोटे तौर पर उष्णकटिबंधीय बरसाती कहा जा सकता है। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) ने चार आधिकारिक ऋतुएं निर्दिष्ट की हैं:- (1) शीत, दिसंबर से अप्रैल के प्रारंभ तक। वर्ष के सबसे ठंडे महीने दिसंबर और जनवरी होते हैं, जब उत्तर-पश्चिम में औसत तापमान करीब 10-15 डिग्री सेल्सियस (50-59 डिग्री फारेनहाइट) होता है; भारत के दक्षिण-पूर्व में मुख्य भू-भाग पर जैसे-जैसे आप

भूमध्य रेखा की ओर जाएंगे, तो औसत तापमान बढ़ता जाएगा, जो लगभग 20–25 डिग्री सेल्सियस (68–77 डिग्री फारेनहाइट) पर पहुंच जाएगा, (2) ग्रीष्म या मानसून-पूर्व ऋतु, अप्रैल से जून तक (उत्तर-पश्चिमी भारत में अप्रैल से जुलाई) तक। पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्रों में अप्रैल सबसे गर्म महीना होता है; उत्तरी क्षेत्र में सबसे गर्म महीना मई का है। अधिकतर दूरदराज के क्षेत्रों में औसत तापमान करीब 32–40 डिग्री सेल्सियस (90–104 डिग्री फारेनहाइट), (3) मानसून या वर्षा ऋतु, जून से सितंबर तक, इस मौसम में आर्द्र दक्षिण-पश्चिमी ग्रीष्म मानसून छाया रहता है, जो मई के अंत या जून के प्रारंभ में शुरू होकर धीरे-धीरे देशभर में फैलता है। मानसून की वर्षा उत्तर भारत में अक्टूबर के शुरू में कम होने लगती है। दक्षिण भारत में अधिक वर्षा होती है और (4) मानसून-परवर्ती ऋतु, अक्टूबर से दिसंबर तक। उत्तर-पश्चिमी भारत में अक्टूबर और नवंबर आमतौर पर वर्षारहित होते हैं।

हिमालयी राज्यों के अधिक समशीतोष्ण होने के कारण, यहां दो अतिरिक्त ऋतुएं होती हैं:- पतझड़ और वसंत। परंपरागत रूप में भारत में छह ऋतुएं मानी जाती हैं, जिनमें प्रत्येक की अवधि करीब दो महीने होती है। ये हैं- वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, पूर्व पतझड़ (शरद), उत्तर पतझड़ (हेमंत) और शीत (शिशिर)। यह 12 महीनों को छह ऋतुओं में बांटने के ज्योतिषीय वर्गीकरण पर आधारित है। प्राचीन हिंदू कैलेंडर भी इन ऋतुओं को उनके महीनों के क्रम में रखता है।

भारत की जलवायु दो मौसमी हवाओं से प्रभावित होती है- उत्तर-पूर्वी मानसून और दक्षिण-पश्चिमी मानसून। उत्तर-पूर्वी मानसून को आमतौर पर शीतकालीन मानसून कहा जाता है, जिसमें हवाएं ज़मीन से समुद्र की ओर चलती हैं, जबकि दक्षिण-पश्चिम मानसून ग्रीष्मकालीन मानसून है, जिसमें हवाएं हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से होते हुए ज़मीन की ओर बहती हैं। दक्षिण-पश्चिमी मानसून से वर्ष के दौरान देश में सर्वाधिक वर्षा होती है।

वनस्पति

भारत वनस्पति की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार पादप विविधता की दृष्टि से भारत का विश्व में 10वां और एशिया में चौथा स्थान है। कोलकाता स्थित भारतीय वनस्पति विज्ञान सर्वेक्षण (बीएसआई) के अनुसार अभी तक करीब 70 प्रतिशत क्षेत्र में किए गए सर्वेक्षणों में 46,000 पादप प्रजातियां पाई गई हैं। यहां उत्कृष्ट वनस्पतियों की 15,000 किस्में पाई जाती हैं।

उष्ण से लेकर अतिशीत तक विविध जलवायु स्थितियों के साथ, भारत में समृद्ध और विविध वनस्पतियां पाई जाती हैं और इस दृष्टि से भारत की बराबरी गिने-चुने देश कर पाते हैं। भारत को आठ विशिष्ट वानस्पतिक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है। ये हैं- पश्चिमी हिमालय, पूर्वी हिमालय, असम, सिंधु का मैदान, गंगा का मैदान, दक्षिणी क्षेत्र, मालाबार और अंडमान क्षेत्र।

पश्चिमी हिमालय क्षेत्र कश्मीर से कुमाऊं तक फैला है। इसके उष्ण अंचल के जंगलों में चीड़, देवदार, अन्य शंकु वृक्ष और चौड़ी पत्तियों वाले उष्ण वृक्ष बहुतायत में पाए जाते हैं। इससे ऊपर के क्षेत्रों में देवदार, नीले चीड़, सनोवर वृक्ष व श्वेत देवदार के जंगल हैं। लगभग 4,750 मीटर या उससे अधिक ऊंचाई पर उष्ण अंचल की ऊपरी सीमा से अल्पाइन अंचल यानी उच्च पर्वतीय क्षेत्र प्रारंभ होता है। इस अंचल के विलक्षण वृक्षों में उच्च स्तरीय श्वेत देवदार, श्वेत भोज वृक्ष, सदाबहार वृक्ष शामिल हैं। पूर्वी हिमालय क्षेत्र सिक्किम से पूर्व की ओर फैला है और दार्जिलिंग, कुर्सियांग और आसपास के क्षेत्रों को अपने में समेटे है। इस उष्ण अंचल में ओक, लॉरेल्स, मेपल्स, बुरुंश तथा भोजवृक्ष के जंगल हैं। कई शंकुधर वृक्ष, सदाबहार वृक्ष

तथा छोटी बेंत भी यहां होती है। असम क्षेत्र में ब्रह्मपुत्र नदी और सुरमा घाटियां शामिल हैं, जहां आमतौर पर मोटे बांस के गुच्छे और लंबी घास वाले सदाबहार वन हैं। सिंधु के मैदानी क्षेत्र में पंजाब, पश्चिमी राजस्थान और उत्तरी गुजरात के मैदान शामिल हैं। यह एक शुष्क एवं उष्ण क्षेत्र है, जिसमें प्राकृतिक वनस्पतियां मिलती हैं। गंगा का मैदानी क्षेत्र कछारी भूमि कहलाता है, जहां गेहूं, गन्ना और चावल की खेती होती है। इस भू-भाग में केवल छोटे से क्षेत्र में विविध प्रकार के वन पाए जाते हैं। दक्षिणी क्षेत्र में भारतीय प्रायद्वीप की समूची समतल भूमि समाहित है। इस क्षेत्र में झाड़ीदार जंगलों से लेकर मिश्रित पतझड़ी जंगलों की विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं। मालाबार क्षेत्र में अत्यधिक आर्द्र पर्वतीय प्रदेश शामिल है, जो प्रायद्वीप के पश्चिमी तट के समानांतर है। जंगली वनस्पतियों की दृष्टि से समृद्ध होने के अलावा इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण वाणिज्यिक फसलों जैसे- नारियल, सुपारी, काली मिर्च, कॉफी, चाय, रबड़ और काजू की खेती की जाती है। अंडमान क्षेत्र में प्रचुर सदाबहार, मैनग्रोव, तटवर्ती और बरसाती जंगल हैं। हिमालयी क्षेत्र कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक फैला है जिसमें सिक्किम, मेघालय और नगालैंड समाहित हैं। दक्षिणी प्रायद्वीप स्थानिक वनस्पति की दृष्टि से समृद्ध है, जहां बड़ी संख्या में ऐसे पेड़-पौधे हैं, जो और कहीं नहीं पाए जाते हैं।

देश की वनस्पति का अध्ययन भारतीय वनस्पति विज्ञान सर्वेक्षण (बीएसआई) और देशभर में स्थित इसके नौ क्षेत्रीय कार्यालयों तथा कुछ विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान संस्थानों द्वारा किया जाता है।

एथनो-बोटेनिकल यानी मानव-वनस्पति अध्ययन में पादपों और उनके उत्पादों की उपयोगिता के बारे में अध्ययन किया जाता है। ऐसे पौधों का वैज्ञानिक अध्ययन बीएसआई द्वारा किया गया है। देश के विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों में कई विस्तृत नृजातीय सर्वेक्षण किए जा चुके हैं। विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण पौधों की 800 प्रजातियों को विभिन्न क्षेत्रों से इकट्ठा किया गया है और उनकी पहचान की गई है।

कृषि, उद्योग और शहरी विकास के लिए वनों के ह्रास के कारण कई भारतीय पौधों का अस्तित्व खतरे में है। करीब 1,336 पादप प्रजातियां ऐसी हैं जिनका अस्तित्व खतरे में है। बड़े पौधों की करीब 20 प्रजातियों की पहचान की गई है, जिनका अस्तित्व समाप्त होने की आशंका है, क्योंकि उन्हें पिछले 6-10 दशकों से देखा नहीं गया है। भारतीय वनस्पति विज्ञान सर्वेक्षण ने अस्तित्व समाप्ति का खतरा झेल रहे पौधों की एक सूची 'रेड डेटा बुक' के रूप में प्रकाशित की है।

जीव संसाधन

भारत दुनिया में सबसे बड़े जैव-विविधता वाले देशों में से एक है। जहां अद्वितीय जैव-भौगोलिक स्थानों, जलवायु संबंधी विविधताओं और गहरे समुद्र से लेकर हिमालय के उच्च पर्वतीय शृंखलाओं के पारिस्थितिक तंत्रों की विस्तृत व्यूह रचनाएं हैं। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन भारतीय प्राणी सर्वेक्षण संस्था (ZSI) एक सौ वर्ष से भी अधिक पुरानी है, जिसका मुख्यालय कोलकाता में है, एक कोषीय जीव ''प्रोटोजोआ'' से लेकर विशालकाय स्तनधारी जीवों तक प्राणीय संसाधन का अध्ययन कर रही है। देश भर में इसके 16 क्षेत्रीय केंद्र हैं, जो देश के सभी राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में जीव-जंतुओं का अध्ययन करते हैं। विभिन्न पारिस्थितिक प्रणालियों में संरक्षित क्षेत्र मौजूद हैं। भारतीय प्राणी सर्वेक्षण ने देश में 1,02,161 प्रजातियों का दस्तावेज तैयार किया है, जिनमें संधिपाद प्राणियों की संख्या सबसे ज्यादा 76,461 है। वैश्विक प्राणी-विविधता में भारत की भागीदारी 6.52 प्रतिशत है जबकि स्थानिकता करीब 28 प्रतिशत है। देश में पाए जाने वाले जंतुओं की 2800 प्रजातियां वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के विभिन्न अनुच्छेदों के तहत संरक्षित हैं, ताकि उनको बेहतर तरीके से बचाया जा सके।

विश्व जैव-भौगोलिक वर्गीकरण के अनुसार भारत दो प्रमुख भू-क्षेत्रों- प्लेयार्कटिक तथा इंडो-मलायन का प्रतिनिधित्व करता है और तीन बायोम्स अर्थात् उष्णकटिबंधीय आर्द्र वन, उष्णकटिबंधीय शुष्क वन/पर्णपाती वन तथा गर्म रेगिस्तान/अर्द्ध रेगिस्तान भू-प्रकृति वाला क्षेत्र है। भारतीय भू-भाग को 10 जैव-भौगोलिक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है। हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में 30,377 प्रजातियां, ट्रांस हिमालय में 3,324 प्रजातियां, द्वीपों में 11,009 प्रजातियां, उत्तर-पूर्व में 18,527 प्रजातियां, रेगिस्तानों में 3,324 प्रजातियां, अर्द्ध-रेगिस्तान में 7,424 तथा तटीय क्षेत्रों में 11,883 प्रजातियां पाई गई हैं।

जैव विविधता के संरक्षण के लिए देश के 5.02 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र को चिह्नित कर उसमें भारतीय प्राणी सर्वेक्षण द्वारा 120 संरक्षित क्षेत्रों को पूर्णतः सूचीबद्ध करके 903 संरक्षित क्षेत्र बनाए गए हैं। भारतीय समुद्रीय क्षेत्र में 20,444 प्रजातियां पाई गई हैं, जिससे भारत समुद्रीय जैव-विविधता वाले अग्रिम देशों में एक हो गया है। इनमें से देश के साफ पानी में 9,457 प्रजातियां, नदी के मुहाने वाले क्षेत्रों में 3,939 प्रजातियां और मैनग्रोव इकोसिस्टम में 5,747 प्रजातियां दर्ज की गई हैं। भारतीय प्राणी जगत में 5,632 प्रजातियां ऐसी हैं, जो अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) की रेड सूची की विभिन्न श्रेणी के तहत आने वाले क्षेत्रों से दर्ज की गई हैं, जिनके संरक्षण पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

जल निकायों के प्रभावी संरक्षण के लिए 37 जलमय भूमि को रामसर स्थलों के रूप में मान्यता दी गई है। अंतरराष्ट्रीय महत्व के इन जलमय क्षेत्रों में विभिन्न समूहों के तहत आने वाले प्राणियों की 6,602 प्रजातियों की सूचना है। यूनेस्को के मानव और बायोस्फीयर अवधारणा के तहत भारत में 18 बायोस्फीयर रिजर्व नामित किए गए हैं, जिनमें से सुंदरबन बायोस्फीयर रिजर्व में सबसे ज्यादा 2,626 प्रजातियां हैं। जबकि ग्रेट निकोबार में 2,079 प्रजातियां, नीलगिरि में 1,875 प्रजातियां, मन्नार की खाड़ी में 1,086 प्रजातियां, मानस में 846 प्रजातियां, पंचमढ़ी में 795 प्रजातियां, अचानकमार-अमरकंटक में 649 प्रजातियां, सिमलीपाल में 539 प्रजातियां, नंदादेवी में 427 प्रजातियां और नोकरेक में 262 प्रजातियां बताई गई हैं। दुनिया में चिह्नित किए गए 35 जैव-विविधता वाले हॉटस्पॉट में से हिमालय श्रृंखला, भारत-बर्मा, सुंदालैंड तथा पश्चिमी घाटों- श्रीलंका को उच्च स्तरीय स्थानिकता के साथ साझा किया जाता है।

यह माना जाता है कि भारतीय प्राणी विविधता कई गुना अधिक हो सकती है क्योंकि अभी अनेक रीढ़ रहित प्राणियों तथा सूक्ष्म जीवों का अध्ययन किया जाना बाकी है या बहुत कम अध्ययन किया गया है। हालांकि भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (जेडएसआई) ने भारतीय जंतुओं की नई खोज की सीमा 350 से 400 प्रजातियां तक प्रकाशित की है, लेकिन 150 से 200 प्रजातियों की वार्षिक दर से नए रिकॉर्ड बनाए हैं।

जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि

जनगणना

भारत की जनगणना, 2001 की 21वीं सदी और तीसरी सहस्राब्दी की प्रथम जनगणना होने के कारण ऐतिहासिक और युगारंभ करने वाली थी। यह एक शताब्दी और सहस्राब्दी परिवर्तन के समय देश में उपलब्ध प्रचुर मानव संसाधनों की स्थिति, उनकी जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि, संस्कृति और आर्थिक संरचना के बारे में मानदंड निर्धारित करने वाले आंकड़े उद्घाटित करती है।

भारत में 2011 की जनगणना 1872 के बाद 15वीं जनगणना थी। इसे दो चरणों में कराया गया: (1) मकानों की सूची और आवास गणना (अप्रैल से सितंबर, 2010) और (2) जनसंख्या की गणना

(9 से 28 फरवरी, 2011 और संशोधनात्मक दौर 1 से 5 मार्च, 2011)। संदर्भ तिथि तारीख 1 मार्च, 2011 मानी गई। बर्फीले क्षेत्रों में जनसंख्या की गणना 11 से 30 सितंबर, 2010 की अवधि में की गई थी। जनसंख्या के अंतिम आंकड़े 30 अप्रैल, 2013 को जारी किए गए।

जनसंख्या

भारत की जनसंख्या 1 मार्च, 2011 को भारत की जनगणना के अनुसार 1,210.9 मिलियन (623.2 मिलियन पुरुष और 587.6 मिलियन महिलाएं) थी। जिनमें से 833.7 मिलियन (68.9 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में तथा बाकी 377.1 मिलियन (31.1 प्रतिशत) शहरी क्षेत्रों में रहते हैं। 2001 की 1028.7 मिलियन जनसंख्या के मद्देनजर भारत की जनसंख्या में 2001 तथा 2011 के मध्य 17.7 प्रतिशत की गिरावट रही।

भारत की जनसंख्या वर्ष 2021 तक 1363.0 मिलियन तथा 2036[3] तक 1522.3 मिलियन होने का अनुमान है। भारत के पास 135.79 मिलियन वर्ग किलोमीटर भू-भाग है जो विश्व के कुल भू-भाग का मात्र 2.4 प्रतिशत है। फिर भी विश्व की आबादी के बहुत बड़े हिस्से को यह आश्रय प्रदान करता है।

जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या संकेंद्रण के महत्वपूर्ण पैमानों में जनसंख्या घनत्व भी एक है। इसे प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में लोगों की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है। भारत का जनसंख्या घनत्व 2011 में 17.7 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि के साथ 382 प्रति वर्ग किलोमीटर था।

1991 और 2011 के बीच सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में जनसंख्या घनत्व में वृद्धि हुई है। वर्ष 2011 में बड़े राज्यों में बिहार सर्वाधिक घनी आबादी वाला राज्य है, जहां जनसंख्या का घनत्व 1,106 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इसके बाद पश्चिम बंगाल (1,028) और केरल (860) का स्थान है।

छोटे राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का जनसंख्या घनत्व 2011 में 11,320 प्रति व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर अधिकतम था, चंडीगढ़ का 9,258 प्रति व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था।

लिंग अनुपात

लिंगानुपात को प्रति 1,000 पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है। किसी समाज में एक निर्दिष्ट काल के दौरान पुरुषों और महिलाओं के बीच प्रचलित समानता को मापने के लिए लिंग अनुपात एक महत्वपूर्ण सामाजिक संकेतक है। भारत में लिंग अनुपात महिलाओं की संख्या की दृष्टि से हमेशा प्रतिकूल रहा है। 20वीं सदी (1901) के प्रारंभ में यह 972 था और उसके बाद 1941 तक इसमें निरंतर कमी दर्ज हुई, जब यह 945 पर पहुंच गया। लिंग अनुपात में सुधार हुआ और 2001 में 933 की तुलना में 2011 में 943 दर्ज हुई। परंतु बच्चों के लिंग अनुपात में गिरावट आई और यह (0.6 वर्ष की आयु के प्रति 1,000 लड़कों की तुलना में 0.6 वर्ष की आयु की लड़कियों की संख्या के रूप में परिभाषित) कम होकर वर्ष 2001 में 927 की तुलना में 2011 में 919 पर आ गई।

---

[3]स्रोतः पॉपुलेशन प्रोजेक्शन (2011-2036) पर तकनीकी समूह की रिपोर्ट https://main.mohfw.gov.in/sites/default/files/Population%20Projection@20Report%202011-2036%20-%20upload_compressed 0.pdf

साक्षरता

2011 की भारत की जनगणना के अनुसार 7 वर्ष और उससे ऊपर की आयु के ऐसे व्यक्ति को साक्षर समझा गया, जो किसी भाषा में पढ़ने और लिखने में सक्षम हो। ऐसा व्यक्ति जो पढ़ सकता है, परंतु लिख नहीं सकता, साक्षर नहीं कहा जा सकता। 1991 से पहले की जनगणनाओं में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों को अनिवार्यतः निरक्षर समझा जाता था।

2011 की जनगणना के अनुसार देश में साक्षरता में वृद्धि हुई है। देश में साक्षरता की दर 73 प्रतिशत है, जिसमें 80.9 प्रतिशत पुरुष और 64.6 प्रतिशत महिलाएं हैं। जो वर्ष 2001 में 64.8 प्रतिशत की तुलना में वृद्धि दर्शाता है। 94 प्रतिशत साक्षरता के साथ केरल ने प्रथम स्थान बनाए रखा है (96.1 प्रतिशत पुरुष साक्षरता और 92.1 प्रतिशत महिला साक्षरता दर)। इसके करीब ही लक्षद्वीप (91.8 प्रतिशत) का स्थान है। देश में साक्षरता की दृष्टि से बिहार अंतिम स्थान पर है, जहां साक्षरता की दर 61.8 प्रतिशत है। पुरुष 71.2 प्रतिशत और महिलाओं 51.5 प्रतिशत।

प्रवासन

प्रवासन जनसांख्यिकी का महत्वपूर्ण संकेत है। विभिन्न सामाजिक, आर्थिक कारणों से लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण होता है। भारत की जनगणना में प्रवासन की गणना दो आधारों पर की जाती है, यानि निवास का पिछला स्थान तथा जन्म का स्थान। निवास के पिछले स्थान के अनुसार यदि प्रवासी के निवास का पिछला स्थान गणना के स्थान से भिन्न है तो निवास के पिछले स्थान से वह प्रवासी के रूप में जाना जाता है। जन्म के स्थान के अनुसार व्यक्ति वर्तमान में जिस स्थान पर रहता है वह जन्म के स्थान से भिन्न है तो वह प्रवासी के रूप में जाना जाता है।

455.8 मिलियन लोग निवास के पिछले स्थान से प्रवासी माने गये, 141.9 मिलियन लोग 2001 तथा 2011 की अवधि के दौरान प्रवासी माने गये। 2001–2011 की अवधि के दौरान भारत में प्रवासियों के प्रमुख हिस्से का (84.8 प्रतिशत) अनुमान गणना की स्थिति में था। केवल 15.6 प्रतिशत प्रवासियों को अंतरराज्यीय प्रवासी माना गया। उसी प्रकार राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में 2001–2011 की अवधि में 64.9 प्रतिशत की गणना जिलेवार तथा बाकी 35.1 प्रतिशत प्रवासियों की अंतर जिला थी।

प्रजनन तथा मृत्यु दर

जनसंख्या के प्रजनन दर [या कुल प्रजनन दर (टीएफआर)] के अनुसार कुल प्रजनन दर अपनी पूरी प्रजनन आयु की अवधि के दौरान प्रति महिला द्वारा बच्चे को जन्म देने की औसत संख्या को इंगित करता है। जनसंख्या में निर्धारित आयु विशिष्ट प्रजनन दर के मद्देनजर होता है। प्रति महिला 2.1 बच्चों के टीएफआर को प्रतिस्थापन स्तर प्रजनन कहा जाता है। 2008 में 2.6 की तुलना में 2018 में 2.2 की टीएफआर में लगातार गिरावट से भारत धीरे–धीरे प्रतिस्थापन स्तर प्रजनन की स्थिति को प्राप्त कर सका है।

अशोधित जन्म दर

अशोधित जन्म दर वह पैमाना है जिससे जन्म दर का आकलन किया जाता है। वर्ष में जीवित जन्मों की कुल संख्या को वर्ष के मध्य जनसंख्या से विभाजित किया जाता है तथा प्रति 1000 की जनसंख्या को 1000 से गुणा करके व्यक्त किया जाता है। भारत में अशोधित जन्म दर 2018 में प्रति 1000 की जनसंख्या पर 20.0 पहुंच गयी है।

अशोधित मृत्यु दर

अशोधित मृत्यु दर वह पैमाना है जिससे मृत्यु दर का आकलन किया जाता है। किसी वर्ष के दौरान कुल मृतकों की संख्या को वर्ष के दौरान कुल जनसंख्या से विभाजित किया जाता है तथा प्रति 1000 की जनसंख्या को 1000 से गुणा करके अभिव्यक्त किया जाता है। भारत में अशोधित मृत्यु दर 2018 में प्रति 1000 की जनसंख्या पर 6.2 थी जो 2008 में धीरे-धीरे घट कर 7.4 हो गयी।

शिशु मृत्यु दर

शिशु मृत्यु दर जनसांख्यिकी का अन्य महत्वपूर्ण संकेतक है। प्रति 1000 जीवित जन्म पर एक वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु की संख्या के रूप में इसे परिभाषित किया जाता है। भारत में शिशु मृत्यु दर 2008 में 53 की तुलना में 2018 में 32 रह गयी। भारत काफी हद तक कमी लाने में सफल हुआ है।

नोट: उपरोक्त वर्णित सभी जनसांख्यिकी आंकड़े महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय, भारत सरकार द्वारा दशकीय जनगणना तथा सैंपल पंजीकरण प्रणाली के तहत अर्ध-वार्षिक सैंपल सर्वे के जरिये प्रस्तुत किये गये हैं। अधिक जानकारी तथा रिपोर्ट एक्सेस करने के लिए कृपया जनगणना की वेबसाइट www.censusindia.gov.in देखें।